डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScanner

Q (2) → गुप्त काल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है? (Gupta Period as a Golden age):

उत्तर:- गुप्तकाल भारतीय इतिहास में एक गौरव पूर्ण स्थान रखता है। गुप्त सम्राटों ने उत्तरी भारत में एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण किया। शदियों बाद भारत में एक बार फिर एक बड़े साम्राज्य का उदय हुआ। गुप्त काल को प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है। जैसे स्वर्ण धातु में परिलक्षित होती है। उसी प्रकार गुप्त काल में देश सर्वांगीण प्रगति की। सामाजिक, राजनीति एवं कला का शायद ही ऐसा कोई पक्ष हो जिसमें भारत की महान प्रतिभा का साक्षात्कार नहीं हुआ हो। अनेक प्रतापी राजाओं ने गौरवशाली विजयों से दिग्दिगंतों में भारतीय पताका फहराई थी।

गुप्तकालीन, अभिलेखों, मुद्राओं तथा साहित्यिक ग्रन्थों के आधार पर हमें प्रशासनिक व्यवस्था के विषय में जानकारी मिलती है। प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था। सिद्धांत राज्य की सारी प्रशासनिक शक्तियाँ उसी में केन्द्रित थी। वह कार्यपालिका न्यायपालिका एवं सैनिकों का प्रधान होता था। लेकिन उसे कानून बनाने का अधिकार नहीं था। फिर भी जनता की सुरक्षा करना वर्ण व्यवस्था एवं धर्म की रक्षा करना उनका कर्तव्य होता था। गुप्त शासकों ने गौरव पूर्ण उपाधियों द्वारा जनता पर अपना

Scanned with CamScanner

प्रभाव स्थापित किया। इन उपाधियों से ऐसा लगता है कि गुप्त शासकों के अधीन कई छोटे-छोटे राजा थे तथा गुप्त राजा देवता के सदृश्य था। यही कारण है कि गुप्त राजाओं की तुलना सूर्य, अग्नि, वायु, यम, कुबेर, विष्णु "आदि" से की गई है।

संस्कृत के कवि कालिदास उसके दरबार के शोभा को बढ़ाते थे। चीनी यात्री फाह्यिान उसी समय में भारत आया था। कुमार गुप्त जो अपने पिता चन्द्रगुप्त II के बाद गद्दी पर बैठा, उसका भी शासनकाल शांतिपूर्ण था।

गुप्त साम्राज्य का काल भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है। इस काल में भारत को मजबूत शासन मिला। जिसके चलते ~~सभी~~ लोग काफी खुश थे। इस काल में मगध एवं उसके आस-पास का क्षेत्र आर्थिक रूप से काफी प्रगति की। इतना ही नहीं दक्षिण की ओर से समुद्रगुप्त द्वारा हासिल किये गये धन से भी इस क्षेत्र में खुशहाली आई।

कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में इतनी प्रगति हुई की गुप्तकाल को भी कभी-कभी हिन्दु पुनर्जागरण का काल भी कहा जाता है। इसकी तुलना हम इंगलैण्ड के एलिजाबेथ काल से कर सकते हैं। साहित्य के क्षेत्र में कालिदास जिस रॉबिन्सन ने भारतीय शेक्सपीयर भी कहा है। इससे सात ग्रंथों की रचना इसी काल में की थी। विज्ञान के क्षेत्र में वाराहमिहिर

Scanned with CamScanner

और आर्यभट्ट गुप्तकाल के अन्य वैज्ञानिक थे। इतना ही नहीं कलाकारों को भी गुप्त शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ। इस काल में मूर्तिकला के कुछ खूबसूरत नमूने भी तैयार हुए। सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में भी यह काल काफी प्रगति की। इसी काल में जंगलों को काटकर उसे कृषि योग्य भूमि तैयार की गई। तथा साथ ही साथ सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था की गई। इतना ही नहीं बर्तन बनाने की कला, धातुकला, आभूषण कला, सिक्के बनाना, सिलाई, कढ़ाई, पत्थर काटने की कला तथा हाथी दाँत जैसे शिल्पों में उन्नति हुई। इन उद्योगों की उन्नति से समाज को काफी फायदा ही नहीं हुआ बल्कि इन उद्योगों में लगे शिल्पीयों का भी समाज में स्थान ऊँचा हो गया। समाज में इनकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई इसी काल में श्रीलंका कम्बोडिया, सीरिया, ईरान, अरब चीन आदि के साथ भारत का व्यापारिक संबंध काफी अच्छा था। इन व्यापारों के ~~भी काफी फायदा~~ माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति दक्षिण पूर्वी एशिया तक पहुँच गई। इसके पहुँचने से व्यापार को भी काफी फायदा हुआ। व्यापार के साथ-साथ वे अपने देश की गरिमामयी सभ्यता और संस्कृति भी लेती हुई। यही कारण है कि बौद्ध धर्म शैव धर्म और वैष्णव धर्म तो इस धरती पर अपना अस्तित्व बना लिया। प्रगतिशील उद्योग और खुश हाल